



Mrs Shefali shukla

20 Mar 1988

08:16 AM

Lucknow

Model: Web-MyKundli

Order No: 119452201

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 20/03/1988
दिन _____: रविवार
जन्म समय _____: 08:16:00 घंटे
इष्ट _____: 05:13:17 घटी
स्थान _____: Lucknow
राज्य _____: Uttar Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 26:50:00 उत्तर
रेखांश _____: 80:54:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:06:24 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 08:09:36 घंटे
वेलान्तर _____: -00:07:28 घंटे
साम्पातिक काल _____: 20:01:01 घंटे
सूर्योदय _____: 06:10:41 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:17:28 घंटे
दिनमान _____: 12:06:47 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 06:01:20 मीन
लग्न के अंश _____: 16:44:44 मेष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मेष - मंगल
राशि-स्वामी _____: मेष - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: अश्विनी - 2
नक्षत्र स्वामी _____: केतु
योग _____: ऐन्द्र
करण _____: तैत्तिरीय
गण _____: देव
योनि _____: अश्व
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: सिंह
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: चे-चेतना
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मीन

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1909	फाल्गुन	30
पंजाबी	संवत : 2044	चैत्र	7
बंगाली	सन् : 1394	चैत्र	6
तमिल	संवत : 2044	पंगुनी	7
केरल	कोल्लम : 1163	मीनम	7
नेपाली	संवत : 2044	चैत्र	7
चैत्रादि	संवत : 2045	चैत्र	शुक्ल 3
कार्तिकादि	संवत : 2045	चैत्र	शुक्ल 3

पंचांग

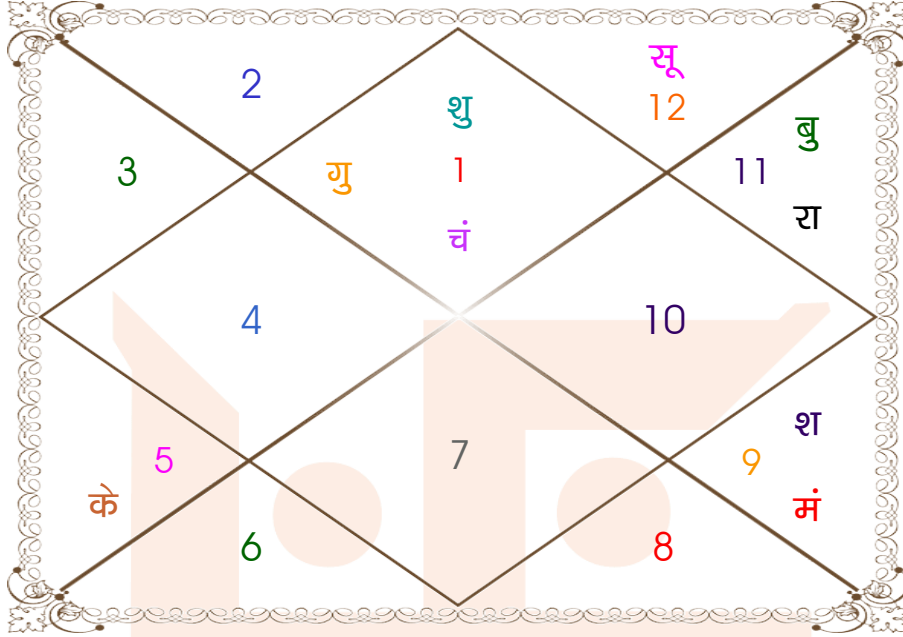
सूर्योदय कालीन तिथि _____: 3
तिथि समाप्ति काल _____: 23:20:02
जन्म तिथि _____: 3
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: अश्विनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 24:30:30 घंटे
जन्म योग _____: अश्विनी
सूर्योदय कालीन योग _____: ऐन्द्र
योग समाप्ति काल _____: 19:09:25 घंटे
जन्म योग _____: ऐन्द्र
सूर्योदय कालीन करण _____: तैतिल
करण समाप्ति काल _____: 12:23:20 घंटे
जन्म करण _____: तैतिल
भयात _____: 15:37:39
भभोग _____: 56:13:55
भोग्य दशा काल _____: केतु 5 वर्ष 0 मा 13 दि

घात चक्र

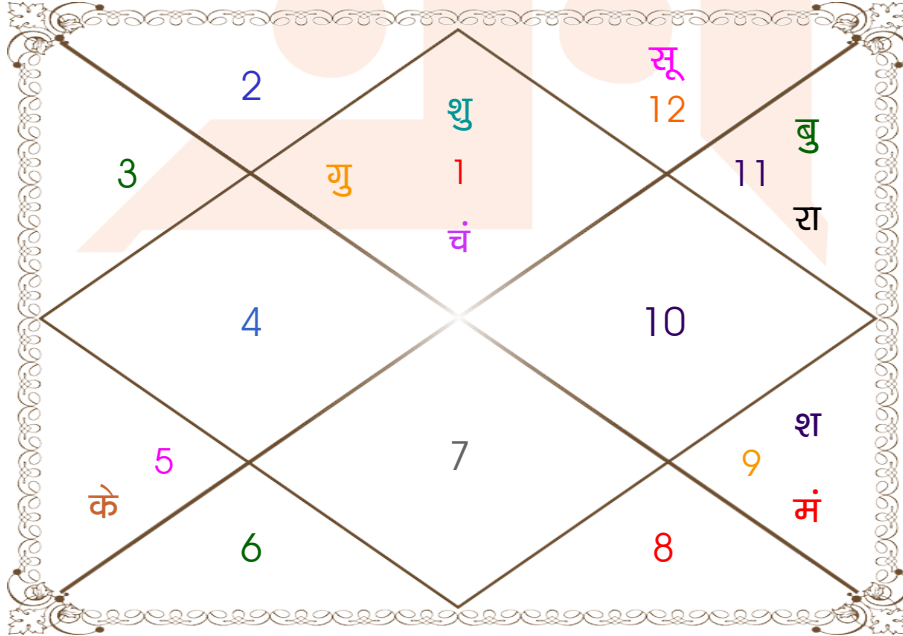
मास _____: कार्तिक
तिथि _____: 1-6-11
दिन _____: रविवार
नक्षत्र _____: मघा
योग _____: विष्कुम्भ
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मृग
लग्न _____: मेष
सूर्य _____: कर्क
चन्द्र _____: मेष
मंगल _____: सिंह
बुध _____: वृष
गुरु _____: कन्या
शुक्र _____: तुला
शनि _____: मिथुन
राहु _____: वृश्चिक

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



Nakshatra jyotish Ratan kendra

C-10 Rajendra Nagar Bareilly

919458160000

amitkalra40@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

सू	गु ल चं शु		
रा बु			
			के
श मं			

लग्न कुंडली

	ल गु	चं शु	सू रा बु
के			मं श

विंशोत्तरी
केतु 5वर्ष 0मा 13दि
केतु

20/03/1988

04/04/2106

केतु	02/04/1993
शुक्र	02/04/2013
सूर्य	03/04/2019
चन्द्र	02/04/2029
मंगल	02/04/2036
राहु	03/04/2054
गुरु	03/04/2070
शनि	02/04/2089
बुध	04/04/2106

योगिनी
भ्रामरी 2वर्ष 10मा 16दि
भ्रामरी

04/02/2023

04/02/2027

भ्रामरी	16/07/2023
भद्रिका	04/02/2024
उल्का	05/10/2024
सिद्धा	16/07/2025
संकटा	05/06/2026
मंगला	16/07/2026
पिंगला	05/10/2026
धान्या	04/02/2027

Nakshatra jyotish Ratan kendra

C-10 Rajendra Nagar Bareilly

919458160000

amitkalra40@gmail.com

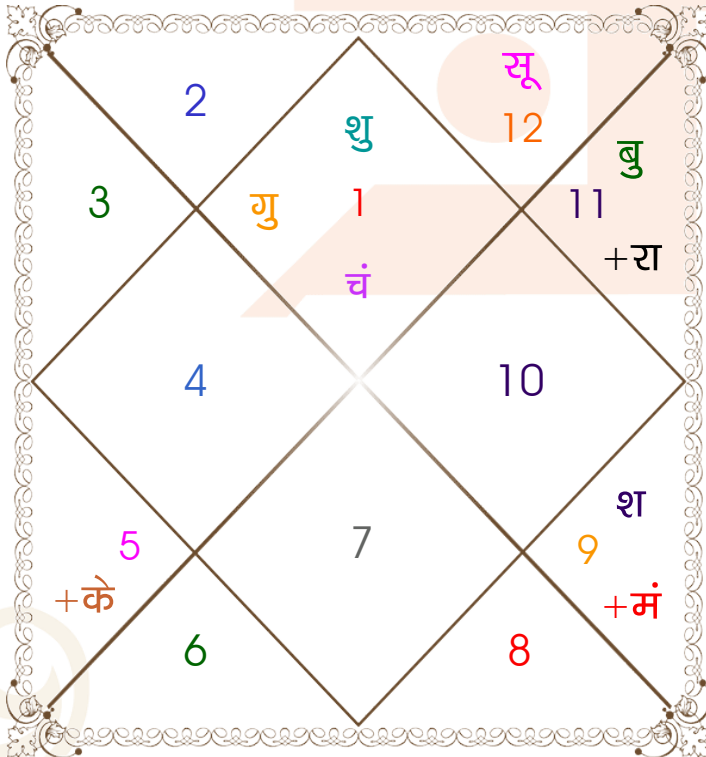
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मेष	16:44:44	444:17:19	भरणी	2	2	मंगल	शुक्र	चंद्र	---
सूर्य			मीन	06:01:20	00:59:38	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	मित्र राशि
चंद्र			मेष	03:44:26	14:18:40	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	चंद्र	सम राशि
मंगल			धनु	24:18:55	00:40:30	पूर्वाषाढ़ा	4	20	गुरु	शुक्र	बुध	मित्र राशि
बुध			कुंभ	11:16:25	01:23:40	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	शनि	सम राशि
गुरु			मेष	08:46:01	00:13:14	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	गुरु	मित्र राशि
शुक्र			मेष	21:19:06	01:04:05	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	गुरु	सम राशि
शनि			धनु	08:27:51	00:02:09	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	सम राशि
राहु	व		कुंभ	29:23:31	00:00:37	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	सूर्य	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	29:23:31	00:00:37	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	राहु	शत्रु राशि
हर्ष			धनु	07:14:51	00:00:49	मूल	3	19	गुरु	केतु	राहु	---
नेप			धनु	16:21:43	00:00:45	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	चंद्र	---
प्लूटो	व		तुला	18:33:16	00:01:07	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	चंद्र	---
दशम भाव			मकर	04:27:40	--	उत्तराषाढ़ा	--	21	शनि	सूर्य	शनि	--

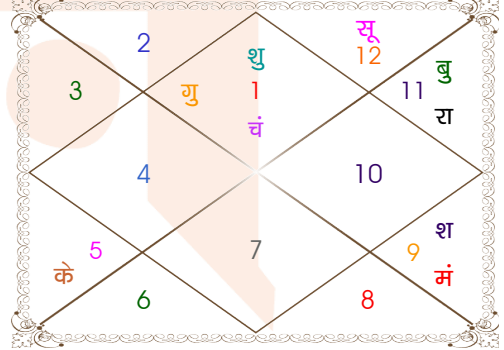
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:41:35

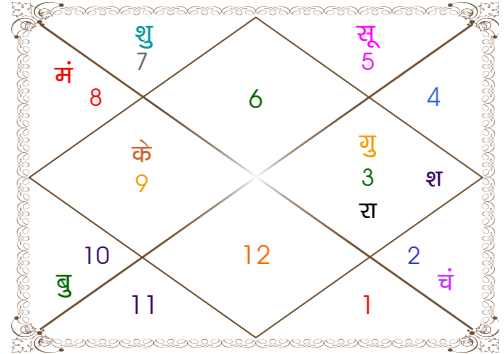
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Nakshatra jyotish Ratan kendra

C-10 Rajendra Nagar Bareilly

919458160000

amitkalra40@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मीन 29:41:53	मेष 16:44:44
2	मेष 29:41:53	वृष 12:39:03
3	वृष 25:36:12	मिथुन 08:33:22
4	मिथुन 21:30:31	कर्क 04:27:40
5	कर्क 21:30:31	सिंह 08:33:22
6	सिंह 25:36:12	कन्या 12:39:03
7	कन्या 29:41:53	तुला 16:44:44
8	तुला 29:41:53	वृश्चिक 12:39:03
9	वृश्चिक 25:36:12	धनु 08:33:22
10	धनु 21:30:31	मकर 04:27:40
11	मकर 21:30:31	कुम्भ 08:33:22
12	कुम्भ 25:36:12	मीन 12:39:03

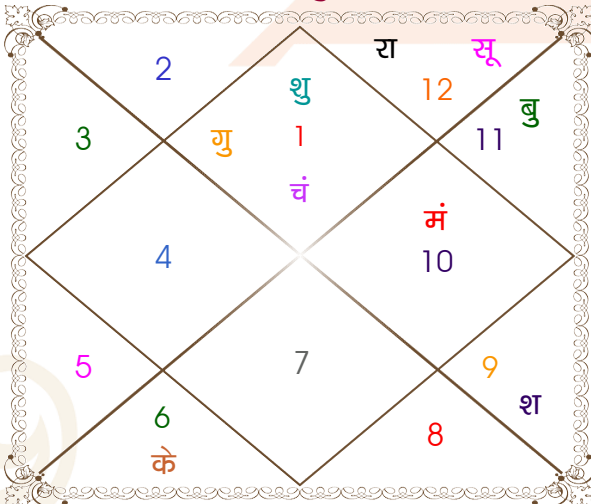
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मेष 16:44:44	
2	वृष 16:02:50	
3	मिथुन 10:24:23	
4	कर्क 04:27:40	
5	सिंह 02:04:53	
6	कन्या 06:37:59	
7	तुला 16:44:44	
8	वृश्चिक 16:02:50	
9	धनु 10:24:23	
10	मकर 04:27:40	
11	कुम्भ 02:04:53	
12	मीन 06:37:59	

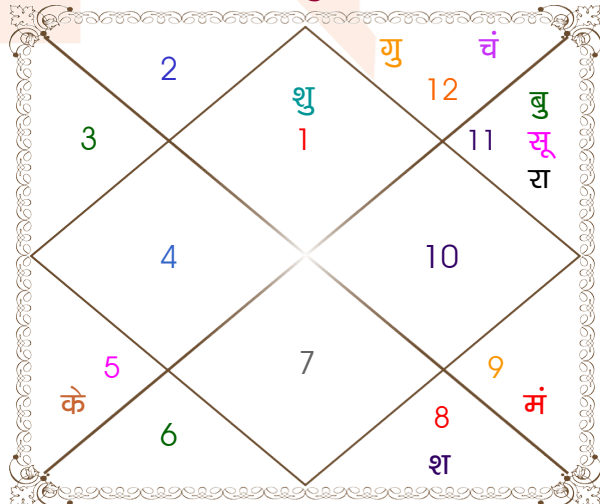
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Nakshatra jyotish Ratan kendra

C-10 Rajendra Nagar Bareilly

919458160000

amitkalra40@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 5 वर्ष 0 मास 13 दिन

केतु 7 वर्ष 20/03/1988 02/04/1993	शुक्र 20 वर्ष 02/04/1993 02/04/2013	सूर्य 6 वर्ष 02/04/2013 03/04/2019	चंद्र 10 वर्ष 03/04/2019 02/04/2029	मंगल 7 वर्ष 02/04/2029 02/04/2036
00/00/0000	शुक्र 02/08/1996	सूर्य 21/07/2013	चंद्र 01/02/2020	मंगल 29/08/2029
00/00/0000	सूर्य 02/08/1997	चंद्र 20/01/2014	मंगल 01/09/2020	राहु 17/09/2030
20/03/1988	चंद्र 03/04/1999	मंगल 27/05/2014	राहु 03/03/2022	गुरु 24/08/2031
चंद्र 05/10/1988	मंगल 02/06/2000	राहु 21/04/2015	गुरु 03/07/2023	शनि 02/10/2032
मंगल 03/03/1989	राहु 03/06/2003	गुरु 07/02/2016	शनि 31/01/2025	बुध 29/09/2033
राहु 21/03/1990	गुरु 01/02/2006	शनि 19/01/2017	बुध 03/07/2026	केतु 25/02/2034
गुरु 25/02/1991	शनि 02/04/2009	बुध 26/11/2017	केतु 01/02/2027	शुक्र 27/04/2035
शनि 05/04/1992	बुध 01/02/2012	केतु 03/04/2018	शुक्र 02/10/2028	सूर्य 02/09/2035
बुध 02/04/1993	केतु 02/04/2013	शुक्र 03/04/2019	सूर्य 02/04/2029	चंद्र 02/04/2036
राहु 18 वर्ष 02/04/2036 03/04/2054	गुरु 16 वर्ष 03/04/2054 03/04/2070	शनि 19 वर्ष 03/04/2070 02/04/2089	बुध 17 वर्ष 02/04/2089 04/04/2106	केतु 7 वर्ष 04/04/2106 00/00/0000
राहु 14/12/2038	गुरु 21/05/2056	शनि 05/04/2073	बुध 30/08/2091	केतु 31/08/2106
गुरु 09/05/2041	शनि 02/12/2058	बुध 14/12/2075	केतु 26/08/2092	शुक्र 31/10/2107
शनि 15/03/2044	बुध 09/03/2061	केतु 22/01/2077	शुक्र 27/06/2095	सूर्य 07/03/2108
बुध 02/10/2046	केतु 13/02/2062	शुक्र 24/03/2080	सूर्य 02/05/2096	चंद्र 21/03/2108
केतु 21/10/2047	शुक्र 14/10/2064	सूर्य 06/03/2081	चंद्र 02/10/2097	00/00/0000
शुक्र 20/10/2050	सूर्य 02/08/2065	चंद्र 05/10/2082	मंगल 29/09/2098	00/00/0000
सूर्य 14/09/2051	चंद्र 02/12/2066	मंगल 14/11/2083	राहु 19/04/2101	00/00/0000
चंद्र 15/03/2053	मंगल 08/11/2067	राहु 20/09/2086	गुरु 25/07/2103	00/00/0000
मंगल 03/04/2054	राहु 03/04/2070	गुरु 02/04/2089	शनि 04/04/2106	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 5 वर्ष 0 मा 20 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - बुध 31/01/2025 03/07/2026	चंद्र - केतु 03/07/2026 01/02/2027	चंद्र - शुक्र 01/02/2027 02/10/2028	चंद्र - सूर्य 02/10/2028 02/04/2029	मंगल - मंगल 02/04/2029 29/08/2029
बुध 15/04/2025 केतु 15/05/2025 शुक्र 09/08/2025 सूर्य 04/09/2025 चंद्र 17/10/2025 मंगल 16/11/2025 राहु 02/02/2026 गुरु 12/04/2026 शनि 03/07/2026	केतु 15/07/2026 शुक्र 20/08/2026 सूर्य 30/08/2026 चंद्र 17/09/2026 मंगल 30/09/2026 राहु 01/11/2026 गुरु 29/11/2026 शनि 02/01/2027 बुध 01/02/2027	शुक्र 13/05/2027 सूर्य 13/06/2027 चंद्र 03/08/2027 मंगल 07/09/2027 राहु 07/12/2027 गुरु 27/02/2028 शनि 02/06/2028 बुध 27/08/2028 केतु 02/10/2028	सूर्य 11/10/2028 चंद्र 26/10/2028 मंगल 06/11/2028 राहु 03/12/2028 गुरु 27/12/2028 शनि 25/01/2029 बुध 20/02/2029 केतु 03/03/2029 शुक्र 02/04/2029	मंगल 11/04/2029 राहु 03/05/2029 गुरु 23/05/2029 शनि 16/06/2029 बुध 07/07/2029 केतु 16/07/2029 शुक्र 10/08/2029 सूर्य 17/08/2029 चंद्र 29/08/2029
मंगल - राहु 29/08/2029 17/09/2030	मंगल - गुरु 17/09/2030 24/08/2031	मंगल - शनि 24/08/2031 02/10/2032	मंगल - बुध 02/10/2032 29/09/2033	मंगल - केतु 29/09/2033 25/02/2034
राहु 26/10/2029 गुरु 16/12/2029 शनि 15/02/2030 बुध 10/04/2030 केतु 03/05/2030 शुक्र 05/07/2030 सूर्य 25/07/2030 चंद्र 26/08/2030 मंगल 17/09/2030	गुरु 01/11/2030 शनि 25/12/2030 बुध 12/02/2031 केतु 04/03/2031 शुक्र 29/04/2031 सूर्य 16/05/2031 चंद्र 14/06/2031 मंगल 04/07/2031 राहु 24/08/2031	शनि 27/10/2031 बुध 23/12/2031 केतु 16/01/2032 शुक्र 23/03/2032 सूर्य 13/04/2032 चंद्र 16/05/2032 मंगल 09/06/2032 राहु 09/08/2032 गुरु 02/10/2032	बुध 22/11/2032 केतु 13/12/2032 शुक्र 11/02/2033 सूर्य 02/03/2033 चंद्र 01/04/2033 मंगल 22/04/2033 राहु 15/06/2033 गुरु 03/08/2033 शनि 29/09/2033	केतु 08/10/2033 शुक्र 01/11/2033 सूर्य 09/11/2033 चंद्र 21/11/2033 मंगल 30/11/2033 राहु 22/12/2033 गुरु 11/01/2034 शनि 04/02/2034 बुध 25/02/2034
मंगल - शुक्र 25/02/2034 27/04/2035	मंगल - सूर्य 27/04/2035 02/09/2035	मंगल - चंद्र 02/09/2035 02/04/2036	राहु - राहु 02/04/2036 14/12/2038	राहु - गुरु 14/12/2038 09/05/2041
शुक्र 07/05/2034 सूर्य 28/05/2034 चंद्र 03/07/2034 मंगल 28/07/2034 राहु 30/09/2034 गुरु 25/11/2034 शनि 01/02/2035 बुध 02/04/2035 केतु 27/04/2035	सूर्य 04/05/2035 चंद्र 14/05/2035 मंगल 22/05/2035 राहु 10/06/2035 गुरु 27/06/2035 शनि 17/07/2035 बुध 04/08/2035 केतु 12/08/2035 शुक्र 02/09/2035	चंद्र 20/09/2035 मंगल 02/10/2035 राहु 03/11/2035 गुरु 02/12/2035 शनि 04/01/2036 बुध 03/02/2036 केतु 16/02/2036 शुक्र 22/03/2036 सूर्य 02/04/2036	राहु 28/08/2036 गुरु 06/01/2037 शनि 12/06/2037 बुध 29/10/2037 केतु 26/12/2037 शुक्र 08/06/2038 सूर्य 28/07/2038 चंद्र 18/10/2038 मंगल 14/12/2038	गुरु 10/04/2039 शनि 27/08/2039 बुध 29/12/2039 केतु 18/02/2040 शुक्र 13/07/2040 सूर्य 26/08/2040 चंद्र 07/11/2040 मंगल 28/12/2040 राहु 09/05/2041

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

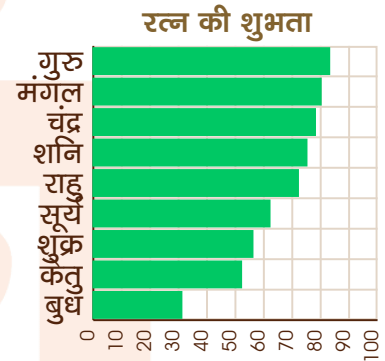
मूलांक	2
भाग्यांक	4
मित्र अंक	2, 7, 8, 4
शत्रु अंक	5, 6
शुभ वर्ष	20, 29, 38, 47, 56
शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	83%	स्वास्थ्य, भाग्योदय, कम खर्च
मूंगा	मंगल	80%	भाग्योदय, स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
मोती	चंद्र	78%	स्वास्थ्य, सुख
नीलम	शनि	75%	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
गोमेद	राहु	72%	धनार्जन, भाग्योदय
माणिक्य	सूर्य	62%	कम खर्च, सन्तति सुख
हीरा	शुक्र	56%	स्वास्थ्य, धन, दम्पति
लहसुनिया	केतु	52%	सन्तति सुख, कम खर्च
पन्ना	बुध	31%	हानि, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	02/04/1993	50%	66%	86%	31%	83%	62%	62%	59%	64%
शुक्र	02/04/2013	50%	66%	80%	44%	83%	69%	81%	78%	58%
सूर्य	03/04/2019	75%	84%	86%	31%	89%	38%	62%	59%	28%
चंद्र	02/04/2029	69%	91%	80%	44%	83%	56%	75%	59%	28%
मंगल	02/04/2036	69%	84%	92%	6%	89%	56%	75%	59%	58%
राहु	03/04/2054	50%	66%	67%	31%	83%	62%	81%	84%	28%
गुरु	03/04/2070	69%	84%	86%	6%	95%	38%	75%	72%	52%
शनि	02/04/2089	50%	66%	67%	44%	83%	62%	88%	78%	28%
बुध	04/04/2106	69%	66%	80%	53%	83%	62%	75%	72%	52%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

अशुभ
अशुभ
शुभ
अशुभ
अशुभ

क्षेत्र

कम खर्च
बुरा स्वास्थ्य
धन
सुख हानि
दुर्घटना

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगी तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगी। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्योदय नहीं होता। अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा हमेशा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगी। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा भी आप कम ही सम्पन्न करेंगी। आयु के साथ साथ जीवन में भाग्य एवं धर्म के महत्व को भी स्वीकार करेंगी। समाज में आपको विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति की संभावना भी रहेगी। आप उत्साह एवं पराक्रम से अपने कार्यों को सम्पन्न करने में सर्वदा तत्पर रहेंगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप अधिक मात्रा में व्यय करेंगी तथा यह व्यय शुभाशुभ दोनों प्रकार से होगा। साथ ही जमीन जायदाद आदि पर आप अधिक से अधिक व्यय करना पसन्द करेंगी तथा इसमें आपको प्रचुर मात्रा में लाभ भी होगा। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगी। दाम्पत्य जीवन का आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी। समाज में सभी लोग आपके प्रभाव एवं पराक्रम को स्वीकार करेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सुख एवं सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि सुख से युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। सांसारिक सुख संसाधनों को भी आप परिश्रम पूर्वक प्राप्त करेंगी लेकिन माता का सुख तथा स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव के कारण आप परिश्रम एवं पराक्रम से कर्म की

महत्ता को प्रमुखता देते हुए अपना भाग्योदय स्वयं करेंगी जिससे आपका परिवार खुशहाल रहेगा तथा दाम्पत्य जीवन में भी मधुरता रहेगी। पारिवारिक जनों को यथोचित सुख सुविधाएं प्रदान करने में आप सफल रहेंगी।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं । यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं । त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है । अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है ।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है । इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है । यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं ।

ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभान्वित होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही उनकी प्रवृत्ति पुण्य एवं दान संबंधी कार्यों को करने की रहेगी अतः आपको भी वे पुण्य कार्यों की ओर प्रेरित करेंगे। साथ ही धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण आदर की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव उत्पन्न होगा परन्तु कुछ समय के बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। जीवन में आप उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगी एवं समयानुसार उनको पूर्ण सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कोई कष्ट नहीं होने देंगी।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरु, यात्रा करने का शौकीन ,आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आप के जन्म समय में चन्द्रमा लग्न में विद्यमान हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से उन्हें लम्बी आयु की प्राप्ति होगी। आपके जन्म के उपरान्त वे धन सम्पत्ति को भी प्राप्त करने में सफल होगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य रहेगा तथा जीवन के सभी शुभ एवं महत्व पूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप के परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं मतभेदों की प्रायः अल्पता ही रहेगी।

आप भी उनके प्रति मन में पूर्ण सम्मान तथा आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए प्रायः तत्पर रहेंगी। इससे आप लोगों का एक दूसरे के प्रति विश्वास आदि में वृद्धि होगी जिससे आजीवन मधुर संबंध बने रहेंगे। इससे आप परस्पर सहयोग भाव से

जीवन में प्रसन्नता की प्राप्ति करेंगी।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, क्रूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा एवं यत्नपूर्वक जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी भाग्योन्नति करते रहेंगे। साथ ही आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी एवं सुख दुःख में सर्वदा पूर्ण सहयोग रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा कटुता का वातावरण भी बनेगा लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में उनका पूर्ण सहयोग करेंगी एवं समयानुसार वांछित आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उच्चभाव, धनी, विद्वान्, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

लग्न (प्रथम) में शुक्र हो तो जातक सुन्दरदेही, दीर्घायु, राजप्रिय, कामी, उच्चसरकारी पद पर आसीन, विलासी, भोगी, विद्वान्, प्रवासी, मधुरभाषी, प्रसिद्ध सुखी एवं ऐश्वर्यवान् होता है।

मेष राशि में शुक्र हो तो जातक स्वप्न जगत में विचारने वाला, आवेशपूर्ण स्वभाव, अस्थिरमन, दुःखी, बुद्धिमान्, आरामतलब, दुराचारी, परस्त्रीरत, झगड़ालू विश्वास हीन एवं अधिक खर्च करने वाला होता है।

शनि

नवम भाव में शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- चन्द्र
(03/04/2019 - 02/04/2029)

आपकी कुण्डली में चन्द्र की महादशा 03/04/2019 को आरम्भ तथा 02/04/2029 समाप्त होगी। इसकी अवधि दस वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र प्रथम भाव में अवस्थित है और आपके लग्न को बल प्रदान कर रहा है। यह आपकी शारीरिक संरचना, गठन, जीवन-शक्ति, ऊर्जस्विता, समृद्धि लम्बी आयु आदि का प्रतिनिधित्व करता है। संक्षेप में दस वर्ष की इस अवधि में आपको संतोष के साथ-साथ शांति और समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपकी समृद्धि अत्यंत सुदृढ़ होगी। यह अवधि गतिविधि से परिपूर्ण होगी।

स्वास्थ्य :

चन्द्र लग्न में अवस्थित है जो केन्द्र और त्रिकोण दोनों है। यह स्थिति सुखी और स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करती है। इस दशा में कोई घातक रोग अथवा दुर्घटना नहीं होगी। आप स्वयं को शक्तिशाली अनुभव करेंगे और अपने दैनिक कार्यों का उपयुक्त ढंग से सम्पादन करने में समर्थ होंगे। आप सुन्दर हैं और अत्यन्त भावुक, कुतूहली, व्यग्र तथा बेचैन हैं।

धन सम्पत्ति :

आपका मस्तिष्क तथा बुद्धि अधिक धनोपार्जन की दिशा में प्रवृत्त हैं क्योंकि दशेश चन्द्र मस्तिष्क का कारक है। आप अपनी धन-सम्पत्ति की वृद्धि करेंगे। आपके बैंक बैलेन्स तथा अन्य सम्पत्तियों में वृद्धि की सम्भावना भी है।

व्यवसाय :

चन्द्र दशा के दौरान आप अपनी स्थिति तथा कार्य से संतुष्ट होंगे। यदि आप सेवारत हैं तो आपकी उन्नति के आसार हैं और व्यवसायी हैं तो व्यवसाय के विस्तार तथा नये कार्य के संकेत हैं। आपके मस्तिष्क में नये रचनात्मक विचार उभरेंगे जिनकी आपके सहकर्मी तथा उच्चाधिकारी सराहना करेंगे। चन्द्र दशा के कारण आपके व्यवसाय में आपकी स्थिति सुदृढ़ होगी और न्यायप्रियता तथा उच्चे आचरण के लिए आप प्रसिद्ध होंगे। आप ऐसे व्यवसाय का चयन भी करेंगे जिसमें उतार-चढ़ाव हो। आप अधिकार के इच्छुक होंगे। आप एक सतर्क व्यक्ति हैं।

पारिवारिक जीवन :

सप्तम भाव, जो साझेदारी का भाव है, पर चन्द्र की दृष्टि होने के कारण इस काल में आपकी साझेदारी और पारिवारिक जीवन उत्तम होंगे।

आपके जीवनसाथी पूर्ण सहयोगी और सुन्दर होंगे। आपकी माता भी पारिवारिक जीवन में आपकी सहायता करेंगी और आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे। आपके पिता भी आपके व्यवसाय में आपकी सहायता कर आपको आत्म विश्वासी बनाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

तीस वर्ष की आयु के बाद आपका झुकाव उच्च शिक्षा की ओर होगा और आपकी धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में रुचि होगी।



अंतर्दशा :- चन्द्र - शनि
(03/07/2023 - 31/01/2025)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 03/04/2019 को प्रारंभ हुई और 02/04/2029 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 03/07/2023 को प्रारंभ होकर 31/01/2025 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। नवम में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 11, 3 और 6 भावों पर दृष्टि द्वारा अपना प्रभाव डाल रहा है।

इस अवधि में आप एकाकी जीवन व्यतीत कर सकते हैं। साहस में वृद्धि होगी। उदर रोगों से सावधान रहें। घरेलू जीवन में मितव्ययी होंगे। धर्म में रुचि कम हो सकती है मगर सेवाकार्यों, दान आदि में प्रवृत्ति बढ़ेगी। शनि बहुत शक्तिशाली ग्रह है। यह जातक की कर्मठता की परीक्षा लेता है और धैर्यशक्ति बढ़ाता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए आटे की गोलियां मछलियों को खिलाएं। भोजन में पहला कौर गाय को दें। शिवजी की उपासना करें। पीपल को जल अर्पित करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - बुध
(31/01/2025 - 03/07/2026)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

आपके लिए चंद्र महादशा 03/04/2019 को प्रारंभ हुई थी और 02/04/2029 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 31/01/2025 को प्रारंभ होकर 03/07/2026 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। एकादश में स्थित होकर बुध पत्रिका के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व पर प्रभावी हो रहा है। इस अवधि में आप विभिन्न विषयों में पारंगत बनेंगे। बुद्धि तीक्ष्ण होगी और ज्ञानार्जन की इच्छा बलवती होगी। आप धनी और प्रसन्न होंगे। आपके बहुत से वफ़ादार मातहत होंगे जो कार्य-व्यापार में उन्नति में सहायक होंगे।

विज्ञान में प्रसिद्धि प्राप्त होना संभव है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए 6 (रत्ती के पन्ने की सोने की अंगूठी दायें हाथ की मध्यमा उंगली में बुधवार के दिन प्रातःकाल बुध गायत्री मंत्र का जाप करते हुए धारण करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - केतु
(03/07/2026 - 01/02/2027)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 03/04/2019 को प्रारंभ हुई और 02/04/2029 को समाप्त होगी। केतु अंतर्दशा 03/07/2026 को प्रारंभ होकर 01/02/2027 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। पंचम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि द्वारा अपना प्रभाव डाल रहा है।

इस अवधि में आपको विचित्र भावनात्मक अनुभव हो सकते हैं। बहुत सावधानी की आवश्यकता है। हो सकता है घर के सदस्यों और संबंधियों के प्रति आपकी आपकी भावनाओं में कुछ परिवर्तन हो जाए। उदर रोगों से बचाव करें और खान-पान पर नियंत्रण रखें।

आपकी अध्यात्म में रुचि बढ़ेगी।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

1. श्वान को भोजन दें।
2. घर पर भूरा श्वान पालें।
3. गरीबों को मंदिर में कंबल बांटें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - शुक्र
(01/02/2027 - 02/10/2028)

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 03/04/2019 को प्रारंभ होकर 02/04/2029 को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 01/02/2027 को प्रारंभ होकर 02/10/2028 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के प्रथम भाव में स्थित है। प्रथम भाव शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रूपरेखा आदि का परिचायक है। लग्न में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है। इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। सक्रियता बढ़ेगी, जीवन हंसी-खुशी से गुजरेगा। अत्यधिक वासना और विवाहेतर संबंधों से बचें।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें।

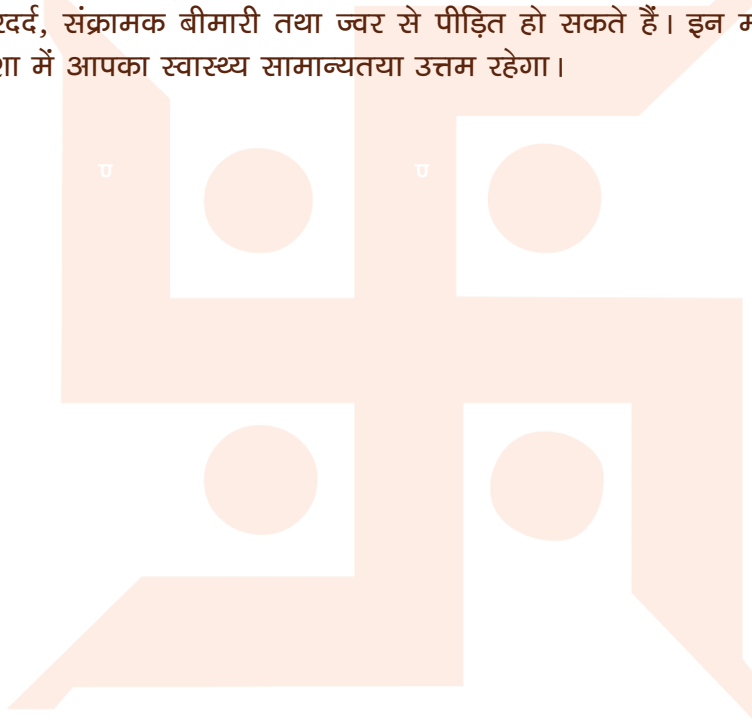
1. चींटियों को शक्कर और आटा दें।

महादशा :- मंगल
(02/04/2029 - 02/04/2036)

मंगल की महादशा 02/04/2029 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 02/04/2036 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल की तृतीय, चतुर्थ और वारहवें भाव पर दृष्टि है। मंगल इस दशा के दौरान अच्छा फल देगा। इसके पूर्व आपकी दस वर्ष की चन्द्र दशा चल रही थी। आपकी यात्रा, कुछ व्यय, आध्यत्मिक उन्नति और सम्भवतः सफलता में कुछ बाधा हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति, समृद्धि और परिवार से सुख की प्राप्ति तथा यात्रा होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपमें रोगों और कष्टों से लड़ने की शक्ति होगी। आपमें भरपूर-आत्मविश्वास तथा जीवनी-शक्ति होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आप सरदर्द, संक्रामक बीमारी तथा ज्वर से पीड़ित हो सकते हैं। इन मामूली बीमारियों को छोड़ इस दशा में आपका स्वास्थ्य सामान्यतया उत्तम रहेगा।



अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। नवम भाव में स्थित होने के कारण मंगल आपको सम्पत्ति, समृद्धि, और सौभाग्य देगा तथा आपको पिता से लाभ मिलेगा। आपको सम्पत्ति, माता से लाभ मिल सकते हैं। किसी शुभ उद्देश्य के लिए व्यय भी हो सकता है। आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ हो सकता है। जीविका के लिए सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी, दवा के क्षेत्र लोहा-इस्पात से सम्बद्ध व्यवसाय या पुलिस के कार्य का चयन कर सकते हैं। आपके लिए योजना तथा प्रशासन से सम्बद्ध व्यवसाय लाभदायक हो सकते हैं। तकनीकी कार्य आपके लिये उपयुक्त होगा। आप एक सफल सर्जन हो सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों को यश, ख्याति, शक्ति और अधिकार की प्राप्ति होगी और आपकी आय में वृद्धि तथा उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का व्यय हो सकता है। आपको साझेदारी में सावधानी बरतनी चाहिए। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का विदेश से व्यापार हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

मंगल की महादशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्राएं होंगी। इस दशा के दौरान आपको जमीन-जायदाद की प्राप्ति होगी। मंगल की अन्तर्दशा में खास तौर से सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी तकनीकी शिक्षा उत्तम होगी। उच्च शिक्षा में आप सफल होंगे और इस दशा में बहुत अच्छा करेंगे। गणित, विधि, इन्जीनियरिंग, विज्ञान तथा तकनीकी के विषय आपके लिए बहुत उपयुक्त होंगे। आपमें आत्मविश्वास होगा और आप कार्य कुशलता से अपना लक्ष्य प्राप्त करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर होगा। आपको आपके बच्चों से सुख मिलेगा। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके जीवनसाथी को सम्बन्धियों से लाभ मिलेगा और अपने ही प्रयासों से धनोपार्जन करेंगे। आपकी माता का आप पर बहुत प्रभाव होगा। आपको उनसे लाभ मिलेगा। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम होगा और सम्पत्ति, सफलता, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को साझेदारी के व्यवसाय में धन की प्राप्ति होगी। आपके बड़े भाई-बहनों को लाभ का अवसर मिलेगा, उनके प्रभावशाली मित्र होंगे और उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति होगी।

अन्तर्दशा :

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा और आपको सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आगे राहु की अन्तर्दशा में कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होगी। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सफल निवेश तथा सट्टे और कुछ परिवर्तन से लाभ होगा। शनि की अन्तर्दशा के कारण आपको कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं हो सकती हैं। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ होगा। आगे केतु की

अन्तर्दशा में कुछ मानसिक तथा शारीरिक समस्याएं हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी यात्रा और जीवन वृत्ति में उन्नति हो सकती है। सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति, शक्ति, उत्तम स्वास्थ्य तथा सुख की प्राप्ति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में आपकी लम्बी यात्रा, व्यय तथा आध्यात्मिक उन्नति होगी।



अंतर्दशा :- मंगल - मंगल
(02/04/2029 - 29/08/2029)

आपके लिए मंगल की महादशा 02/04/2029 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 02/04/2029 को प्रारंभ होकर 29/08/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपकी बहुत सी यात्राएं हो सकती हैं। सब सुख-सुविधाएं, धन उपलब्ध रहेंगे। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र से संबद्ध हो सकते हैं, बहुत से लोगों का भला करेंगे। विदेश यात्रा हो सकती है। आप साहसी होंगे। घरेलू सुख में मामूली कमी आ सकती है। अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे। खर्च बढ़ सकते हैं। कुछ अवांछित परिवर्तन हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उनके अपने भाइयों से संबंध मधुर रहेंगे। आपके पिता सम्मानित होंगे, सुखी रहेंगे और धन प्राप्त करेंगे। माता में विरोधियों को परास्त करने की शक्ति मौजूद रहेगी। भाई-बहनों को साझेदारी से लाभ होगा। उनका कारोबार चमकेगा।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी। अगर वे सेवारत हैं तो निवेश से लाभ प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो स्थिति मजबूत होगी। परामर्शदाताओं और व्यापारियों को कुछ नुकसान हो सकता है या अवांछित परिवर्तन हो सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, पैरों में मामूली चोट लग सकती है। यात्रा के समय सावधानी आवश्यक है। अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंतर्दशा :- मंगल - राहु
(29/08/2029 - 17/09/2030)

आपके लिए मंगल की महादशा 02/04/2029 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 29/08/2029 को प्रारंभ होकर 17/09/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आपके पद और सम्मान में उन्नति होगी। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी और भौतिक सुख उपलब्ध होंगे। बहुत से प्रभावशाली मित्र बनेंगे, वे आपके लिए लाभदायक रहेंगे। शिशु का जन्म हो सकता है। पहले किये निवेश से अब लाभ मिलेगा। सट्टेबाजी से भी धनार्जन हो सकता है। मनोरंजन के साधनों में कार्य कर सकते हैं या तकनीकी कार्यों से लाभ उठा सकते हैं।

आपके जीवनसाथी निवेश और सट्टेबाजी से धन कमा सकते हैं। आपके पिता को

लक्ष्यप्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा। माता को स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। आपके भाई-बहनों की यात्रा हो सकती है, उनके सम्मान में वृद्धि होगी, विवाह हो सकता है।

आपकी संतान के जीवन पर अनुबंधों और साझेदारी का प्रभाव पड़ेगा। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्रा हो सकती है, व्यापारिक गतिविधियां बढ़ सकती हैं, विवाह हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता लाभ उठाएंगे, जबकि व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा मगर कान, घुटनों और मांसपेशियों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द की दाल, नीले वस्त्र और सतनजा दान दें।

